International Journal of Arts & Education Research

मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्औतिक परिवर्तन के प्रति व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

Krishan Kumar Sharma*[1]

[1]Research Scholar, Dept. of Education, C.M.J. Unversity, Shilong, Meghalaya, India.

स्टेनेट के अनुसार,

"प्राचीन संसार में व्यवसाय शब्द इतना प्रचलित नहीं था जितना की इसका आधुनिक समाज में प्रयोग किया जाता है। उस समय कानून, चिकित्सा आदि गिने-चुने व्यवसाय थे।"

सीधे-साधे शब्दों में व्यवसाय जीविकोपार्जन का तरीका होता है। यह एक व्यापक शब्द है। इसमें औषि, उद्योग, नौकरी, मछली पालन आदि वे सभी रोजगार सम्मिलित होते हैं जिनसे कोई मानव-समूह अपने जीवन-यापन के लिये आवश्यक साधन और सुविधा अर्जित करता है।

आधुनिक समाज में अनेक वृत्तियों का विकास हो गया है जैसे-चार्टर्ड एकाउन्टेसी, आर्किटेक्ट इंजीनियरी, म्यूजिक, पत्रकारिता, फिल्म एक्टिंग आदि। विद्धानों ने इन वृत्तियों का अध्ययन कर उनमें पाये जाने वाले सामान्य लक्षणों का निर्धारण किया है।

जब जटिलताएँ ही जटिलताएँ इक्कठी होकर किसी अन्य कार्य की प्रक्रिया में बाधाएँ उत्पन्न करती हैं उस कार्य के सम्पूर्ण होने में सन्देह करना व्यर्थ नहीं होगा। यही बात व्यवसायों में प्रवेश के लिये सत्य सिद्ध होती है। मानव-व्यक्तित्व की जटिलता, आधुनिक औद्योगीकरण की जटिलता, शैक्षिक विषयों की जटिलता तथा विभिन्न व्यवसायों की जटिलता ने इक्कठे होकर व्यवसाय-प्रणाली को इतना जटिल बना दिया है कि आज के युग में व्यवसायों की प्रऔति को समझना, व्यवसायों का चयन करना तथा व्यवसायों में प्रवेश करने के लिये विशेषज्ञों की सलाह लेना अनिवार्य हो गया है। बिना परामर्श लिये व्यवसायों का चयन घातक सिद्ध हो सकता है तथा ऐसा हुआ भी है। व्यवसायों की अधिकता तथा तीव्रगति से बदल रही परिस्थितियों को देखते हुए व्यवसाय के अनुरूप व्यक्ति तथा व्यक्ति के अनुरूप व्यवसाय का होना बहुत ही आवश्यक हो चुका है। इतना ही नहीं, व्यवसाय में प्रवेश करने के लिये ही परामर्श पर्याप्त नहीं, बल्कि उसमें प्रवेश करने के पश्चात् उसमें संतोषजनक ढंग से सफलतापूर्वक समायोजन की भी आवश्यकता होती है। अतः व्यावसायिक-निर्देशन की आवश्यकता सीमित दायरे में न होकर विस्तृत है।

IJAER

*Corresponding Author